International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 03-03-2026, Accepted: 03-04-2026, Published: 18-04-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 72-73

उत्तराखंड में पत्रकारिता के उद्भव की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

डॉ० अमिता प्रकाश
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हुकुम सिंह बोरा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सोमेश्वर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड, भारत

सारांश
आधुनिक विश्व को संचार और सूचना के तीव्र प्रवाह का युग कहा जाता है, किंतु इस अवस्था तक पहुँचने से पूर्व पत्रकारिता ने एक दीर्घ ऐतिहासिक विकास यात्रा तय की है। उत्तराखंड जैसे भौगोलिक दृष्टि से दुर्गम क्षेत्र में पत्रकारिता का उद्भव और विकास विशिष्ट ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों की देन रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य उत्तराखंड में पत्रकारिता के उद्भव, उसके क्रमिक विकास और सामाजिक–राजनीतिक भूमिका का ऐतिहासिक अध्ययन करना है। 1842 में मसूरी से प्रकाशित हिल्स जैसे अंग्रेज़ी समाचार पत्रों से लेकर समय विनोद, अल्मोड़ा अखबार, शक्ति, कर्मभूमि और समता जैसे हिंदी एवं क्षेत्रीय पत्रों तक उत्तराखंड की पत्रकारिता ने स्थानीय समाज में आत्मसम्मान, राष्ट्रीय चेतना और सामाजिक सुधार की भावना को सशक्त किया।
यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि उत्तराखंड की पत्रकारिता केवल सूचना संप्रेषण का माध्यम न होकर औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध जनसंघर्ष और सामाजिक जागरण की प्रभावी आवाज के रूप में विकसित हुई।

मूल शब्दः उत्तराखंड, पत्रकारिता का इतिहास, स्थानीय प्रेस, औपनिवेशिक शासन, स्वतंत्रता आंदोलन, क्षेत्रीय चेतना

प्रस्तावना
पत्रकारिता मानव सभ्यता के बौद्धिक और सामाजिक विकास की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रारंभिक काल में विचारों और सूचनाओं का प्रसार मौखिक परंपरा के माध्यम से होता था, किंतु सभ्यता के विकास के साथ–साथ लेखन, मुद्रण और संचार के साधनों में निरंतर परिवर्तन होता गया। शिलालेखों, ताम्रपत्रों, भोजपत्रों और हस्तलिखित ग्रंथों से होते हुए पत्रकारिता ने मुद्रित समाचार पत्रों का रूप ग्रहण किया और आज डिजिटल तथा आभासी माध्यमों तक पहुँच चुकी है।
उत्तराखंड में पत्रकारिता का उद्भव भारत के औपनिवेशिक इतिहास से गहराई से जुड़ा हुआ है। 1815 में गोरखा शासन के पतन के पश्चात यह क्षेत्र ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन आया। प्रारंभिक चरण में स्थानीय जनता ने अंग्रेज़ों को गोरखा शासन से मुक्ति दिलाने वाले शासक के रूप में देखा, किंतु जैसे–जैसे औपनिवेशिक नीतियों का वास्तविक स्वरूप सामने आया, वैसे–वैसे असंतोष और प्रतिरोध की भावना विकसित होने लगी।

औपनिवेशिक शासन, शिक्षा और प्रेस का विकास
ब्रिटिश शासन के साथ उत्तराखंड में पाश्चात्य शिक्षा, मिशनरी गतिविधियों और आधुनिक प्रशासनिक ढाँचे का प्रवेश हुआ। अंग्रेज़ अधिकारियों और मिशनरियों ने अपने प्रशासनिक और धार्मिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मुद्रणालयों और समाचार पत्रों की स्थापना की। प्रारंभ में यह प्रेस अंग्रेज़ी भाषा तक सीमित था और इसका पाठक वर्ग मुख्यतः यूरोपीय अधिकारी एवं शिक्षित वर्ग था।
हालाँकि शिक्षा के प्रसार ने धीरे–धीरे स्थानीय समाज को राजनीतिक और सामाजिक विचारों से परिचित कराया। शिक्षित पहाड़ी युवकों में औपनिवेशिक शासन की आलोचनात्मक समझ विकसित होने लगी, जिसने आगे चलकर पत्रकारिता को जनजागरण का सशक्त माध्यम बना दिया।

उत्तराखंड में अंग्रेज़ी पत्रकारिता का प्रारंभ
उत्तराखंड में पत्रकारिता की औपचारिक शुरुआत 1842 में मसूरी से प्रकाशित अंग्रेज़ी समाचार पत्र Hill से मानी जाती है, जिसके प्रकाशक जॉन मेकिनन थे। यह पत्र न केवल उत्तराखंड बल्कि संपूर्ण उत्तर भारत का प्रारंभिक अंग्रेज़ी समाचार पत्र था। इसके पश्चात 1845 में Moffussilite का प्रकाशन हुआ, जिसे सरकारी नीतियों की आलोचना के कारण साम्राज्य–विरोधी घोषित किया गया।
1870 से 1880 के मध्य Mussoorie EÛchange, Himalayan Chronicle और The Eagle जैसे पत्र प्रकाशित हुए। यद्यपि इन पत्रों का उद्देश्य औपनिवेशिक प्रशासन की आवश्यकताओं की पूर्ति करना था, किंतु इन्होंने उत्तराखंड में प्रेस संस्कृति और समाचार लेखन की आधारशिला रखी।[3]

उत्तराखंड में हिंदी पत्रकारिता का उद्भव
उत्तराखंड में हिंदी पत्रकारिता का वास्तविक आरंभ 1868 में नैनीताल से प्रकाशित समय विनोद से हुआ। यह पत्र हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित होता था और इसके संपादक जयदत्त जोशी थे। समय विनोद ने स्थानीय सामाजिक और प्रशासनिक समस्याओं को अभिव्यक्ति दी, जिससे पहाड़ी समाज में विचार–विमर्श की संस्कृति विकसित हुई।
इसके पश्चात 1871 में अल्मोड़ा अखबार का प्रकाशन उत्तराखंड की पत्रकारिता के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। यह पत्र डिबेटिंग क्लब की वैचारिक पृष्ठभूमि से उत्पन्न हुआ और लगभग आधी सदी तक कुमाऊँ क्षेत्र का प्रमुख समाचार पत्र बना रहा। अल्मोड़ा अखबार ने सरकारी नीतियों की आलोचना, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।[4]

बीसवीं शताब्दी और राष्ट्रीय आंदोलन
बीसवीं शताब्दी के आरंभ के साथ ही भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ने एक संगठित स्वरूप ग्रहण किया। इस राष्ट्रीय चेतना का प्रभाव उत्तराखंड जैसे दूरस्थ पर्वतीय क्षेत्रों में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा। शिक्षित युवकों और समाज सुधारकों ने समाचार पत्रों को अपने विचारों के प्रचार–प्रसार का माध्यम बनाया।
गढ़वाल मंडल में गढ़वाल समाचार, गढ़वाली, पुरुषार्थ और कुमाऊँ क्षेत्र में शक्ति, तरुण कुमाऊँ, स्वाधीन प्रजा तथा जागृत

जनता जैसे पत्रों ने औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जनमत तैयार किया। इन पत्रों ने स्थानीय समस्याओं को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़कर पत्रकारिता को संघर्ष का माध्यम बनाया।[5]

1900 से 1947 तक राष्ट्रीय आंदोलन के स्वरूप में क्रमशः परिवर्तन होता गया। संपूर्ण राष्ट्र में औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध आक्रोश तीव्र होने लगा। उत्तराखंड जैसे दूरस्थ क्षेत्रों के युवकों को भी पाश्चात्य शिक्षा, राजनीतिक विचारों तथा राष्ट्रीय स्तर पर फैल रही स्वतंत्रता की चेतना ने बहुत गहरे तक प्रभावित किया। इन युवकों ने अपने विचारों के प्रसार हेतु समाचार पत्रों को माध्यम के रूप में चुना। परिणामस्वरूप 20वीं सदी में स्थानीय प्रेस और समाचार पत्रों का विकास तेजी से हुआ। उत्तराखंड के गढ़वाल मण्डल में सन् 1902 में लैंसडाउन से गिरजादत्त नैथानी जी ने मासिक पत्र गढ़वाल समाचार का प्रकाशन किया। गढ़वाल से प्रकाशित यह समाचार पत्र दो साल में ही बंद हो गया, किन्तु पत्रकारिता का मार्ग यहीं पर अवरुद्ध नहीं हुआ इसके पश्चात गढ़वाल यूनियन द्वारा देहरादून से सन 1905 में गढ़वाली पत्रिका का प्रकाशन किया गया। सन् 1914 मे ब्रिटिश गढ़वाल से प्रकाशित विशाल कीर्ति तथा 1913 से दुगड्डा से पुनः प्रकाशित हो रहे गढ़वाल समाचार को गढ़वाली में सम्मिलित कर इसे साप्ताहिक पत्र के रूप में प्रकाशित करना प्रारंभ कर दिया गया। 1918 में गिरिजादत्त नैथानी ने दुगड्डा और कभी–कभी नैथाना से पुरुषार्थ का संपादन किया।

इसी मध्य कुमाऊं में अल्मोड़ा अखबार का प्रकाशन और ख्याति लगातार बढ़ रही थी। स्थानीय समाज में इसकी बढ़ती लोकप्रियता का ही परिणाम था कि इसकी पाठक संख्या जो प्रारंभ में मात्र 50–60 थी, से बढ़कर कुछ ही समय मे 1500 तक हो गई थी। सरकारी नीतियों की बार–बार आलोचना करने के कारण 1918 में, अल्मोड़ा अखबार बंद कर दिया गया। अल्मोड़ा अखबार के अतिरिक्त उस समय कुमाऊ में पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन के अन्य प्रयास भी चलते रहे। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप 1913 में अल्मोड़ा से अल्पावधि तक हस्तलिखित समाचार पत्र बाजार बंधु निकला। अगस्त 1918 में लखनऊ से लाई गई एक पुराने प्रेस की सामग्री से बद्रीदत्त पांडे ने अल्मोड़ा के झिझाड़ मोहल्ले के एक भवन में प्रेस स्थापित किया और अल्मोड़ा अखबार के दमन के कुछ महीने बाद ही 15 अक्टूबर 1918 को विजय दशमी के पर्व पर शक्ति का प्रथम अंक "विजय पत्र" के रूप में प्रकाशित किया। गढ़वाल से बैरिस्टर मुकुंदी लाल ने तरुण कुमाऊं का प्रकाशन 1922 में किया। 1922 में अल्मोड़ा से जिला समाचार नामक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ, जो 1925 में कुमाऊं कुमुद नाम से निकलने लगा। अल्मोड़ा से ही राष्ट्रीय आंदोलन के सक्रिय नेता विक्टर मोहन जोशी ने 1930 में स्वाधीन प्रजा नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया। 1938 में कोटद्वार से संदेश नामक साप्ताहिक समाचार पत्र निकाला गया। 1938 में कुमाऊनी भाषा में अचल नामक समाचार पत्र का प्रकाशन हुआ। 1939 में शक्ति से अलग हुए पीतांबर पांडे ने हल्द्वानी से जागृत जनता का प्रकाशन किया। लैंसडाउन से 1939 में कर्मभूमि का प्रकाशन ब्रिटिश सरकार और टिहरी रियासत के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए एक ऐसे मंच के रूप में किया गया जो स्थानीय संघर्ष को आवाज दे सके। गढ़वाल के सिंह नाम से विख्यात भक्तदर्शन और भैरव दत्त धूलिया ने स्थानीय राष्ट्रवादियों से ढाई ढाई हजार के शेयर एकत्र कर कुंवर सिंह नेगी कर्मठ के कालेश्वर प्रेस की स्थापना की और सन 1939 की बसंत पंचमी के दिन कर्मभूमि का प्रकाशन प्रारंभ हुआ। उत्तराखंड में समाचार पत्र प्रकाशन का क्रम निरंतर बढ़ता गया यहां प्रकाशित होने वाले अन्य समाचार पत्रों में हिमालय मासिक (रानीखेत 1918), कुर्मांचल मित्र साप्ताहिक (अल्मोड़ा 1918), ज्योतिष साप्ताहिक (अल्मोड़ा 1919), क्षेत्रीय हितैषी साप्ताहिक (नैनीताल 1928), युगवाणी (देहरादून 1947), हिमाचल (मसूरी 1948), प्रजा बंधु (रानीखेत 1947), कुमाऊं राजपूत (अल्मोड़ा 1948) आदि प्रमुख थे

सामाजिक और दलित पत्रकारिता का विकास

उत्तराखंड की पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक सुधार और दलित चेतना से जुड़ा हुआ है। 1934 में अल्मोड़ा से हरिप्रसाद टम्टा ने दलित पत्रकारिता के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले समाचार पत्र समता का प्रकाशन किया।समता पत्र ने छुआछूत, सामाजिक भेदभाव और आर्थिक शोषण जैसे मुद्दों को प्रमुखता से उठाया। यह पत्र न केवल उत्तराखंड बल्कि संपूर्ण हिंदी पट्टी में दलित पत्रकारिता का एक सशक्त उदाहरण माना जाता है।

समता ने यह सिद्ध किया कि पत्रकारिता केवल राजनीतिक प्रतिरोध तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक न्याय और समानता के संघर्ष में भी उसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।[6]

क्षेत्रीय भाषा, संस्कृति और पत्रकारिता

उत्तराखंड की पत्रकारिता ने क्षेत्रीय भाषाओं और लोकसंस्कृति के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। कुमाऊँनी और गढ़वाली भाषाओं में प्रकाशित पत्रों ने स्थानीय समाज की सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्ति दी। कर्मभूमि जैसे पत्रों ने स्थानीय आंदोलनों और जनसंघर्षों को राष्ट्रीय मंच प्रदान किया, जिससे क्षेत्रीय समस्याएँ व्यापक विमर्श का हिस्सा बनीं।

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उत्तराखंड में पत्रकारिता का उद्भव और विकास ऐतिहासिक परिस्थितियों, औपनिवेशिक शासन और राष्ट्रीय आंदोलन से गहराई से जुड़ा हुआ रहा है। प्रारंभिक दौर में अंग्रेज़ों द्वारा स्थापित प्रेस को स्थानीय प्रबुद्ध वर्ग ने जनजागरण, सामाजिक सुधार और स्वतंत्रता आंदोलन के लिए प्रभावी हथियार के रूप में परिवर्तित किया। उत्तराखंड की पत्रकारिता ने पहाड़ी समाज में आत्मसम्मान, अधिकार चेतना और राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

संदर्भ सूची

1. बद्रीदत्त पांडे, कुमाऊँ का इतिहास, शारदा प्रेस, अल्मोड़ा, 1998, पृ. 210–225।
2. रामकुमार शर्मा, भारतीय पत्रकारिता का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृ. 95–110।
3. शिवप्रसाद जोशी, उत्तराखंड में पत्रकारिता का इतिहास, साहित्य प्रकाशन, नैनीताल, 2005, पृ. 30–50।
4. बुद्धिबल्लभ पंत, अल्मोड़ा अखबार और राष्ट्रीय चेतना, कुमाऊँ अध्ययन केंद्र, अल्मोड़ा, 2010, पृ. 60–85।
5. गिरिजादत्त नैथानी, गढ़वाल में पत्रकारिता और राष्ट्रीय आंदोलन, देहरादून, 2001, पृ. 120–145।
6. हरिप्रसाद टम्टा, समता और दलित पत्रकारिता, उत्तराखंड साहित्य परिषद, देहरादून, 2008 (मूल प्रकाशन 1934), पृ. 15–30।